लक्ष्मी नारायण दुबे महाविद्यालय, मोतीहारी,
पूर्वी चम्पारण, बिहार

भक्तिकाल : प्रमुख काव्यधाराएँ

डॉ. सन्तोष विश्नोई, सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग

भक्ति कालीन साहित्य का विभाजन →

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने सम्पूर्ण भक्तिकालीन साहित्य को प्रमुखतः दो एवं कुल चार भागों में विभाजित किया है यथा—

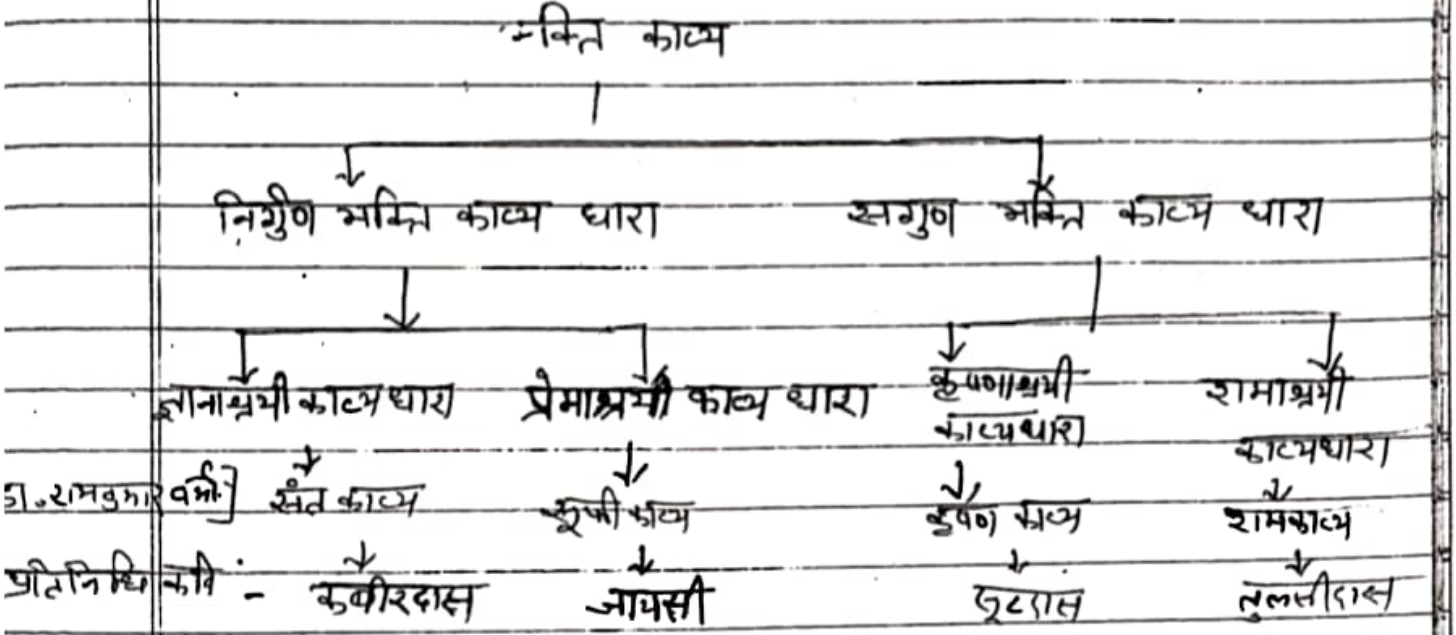

1. निर्गुण भक्ति काव्य धारा →

जिन भक्त कवियों के द्वारा ईश्वर का कोई रूप नहीं मानकर निराकार ईश्वर की उपासना की गई है उनके द्वारा रचित काव्य को ही निर्गुण भक्ति काव्य कहा जाता है।

निर्गुण भक्ति काव्य धारा को भी पुनः दो भागों में विभाजित किया गया है यथा :—

(i) ज्ञानाश्रयी काव्य धारा या संत काव्य
(ii) प्रेमाश्रयी काव्य धारा या सूफी काव्य

(1) ज्ञानाश्रयी काव्य धारा या संत काव्य –

सामान्यत:

भारतीय संतों के द्वारा लिखे गये काव्य को ही ज्ञानाश्रयी काव्यधारा या संतकाव्य के नाम से जाना जाता है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इसे ज्ञानाश्रयी काव्यधारा एवं डा. रामकुमार वर्मा ने इसे संतकाव्य के नाम से पुकारा है।

भारत में संत मत की स्थापना सर्वप्रथम 1267 ई० में पण्ढरपुर (महाराष्ट्र) में संत नामदेव द्वारा की गई थी।

→ संत काव्य का प्रमुख आधार शंकराचार्य के द्वारा परिवर्तित अद्वैत वेदान्त दर्शन को माना जाता है।

→ अद्वैत वेदान्त दर्शन निम्नलिखित तीन सूत्रों पर आधा[रित] माना गया है –

(i) 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या।'

अर्थात ब्रह्म ही सत्य है एवं यह संसार मिथ्या है।

(ii) 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म।' (खलु + इदं)

अर्थात संसार के सभी पदार्थ निश्चित रूप से ब्रह्म के ही अंश हैं।

(iii) 'अहं ब्रह्मास्मि।' (ब्रह्म + अस्मि)

अर्थात मैं भी ब्रह्म ही हूँ।

नोट:- सूफी साधाना पद्धति में प्रयुक्त होने वाला 'अनलहक' सिद्धान्त 'अहं ब्रह्मास्मि' सूत्र पर आधारित माना जाता है।

(ii) प्रेमाश्रयी काव्य धारा या सूफी काव्य

→ मुसलमान कवियों के द्वारा प्रेम को मुख्य विषय बनाकर ईश्वर की उपासना की गई उनके द्वारा रचित काव्य को ही प्रेमाश्रयी काव्य या सूफी काव्य के नाम से जाना जाता है।

→ इस काव्य धारा को प्रेमाश्रयी नाम आचार्य शुक्ल के द्वारा एवं सूफी काव्य नाम डॉ. रामकुमार वर्मा के द्वारा दिया गया है।

→ इस काव्य धारा को प्रेमाख्यानक काव्य, प्रेम कथानक काव्य, रोमांसिक काव्य, इत्यादि नामों से भी पुकारा जाता है।

→ 'सूफी' शब्द की व्युत्पति →

सूफी शब्द की व्युत्पति के सम्बन्ध में निम्नानुसार अनेक मत माने जाते हैं यथा —

1. 'सूफ' शब्द से → सूफ का शाब्दिक अर्थ होता है ऊन अर्थात ऐसे निर्गुण भक्त कवि जो ऊनी वस्त्र धारण करके काव्य रचना करते हैं उनके द्वारा रचित काव्य ही सूफी काव्य कहलाता है।

2. 'सूफा' शब्द से → सूफा का शाब्दिक अर्थ होता है चबूतरा अर्थात मुसलमानो के पवित्र तीर्थस्थ

सूफ - ऊन
सुफा - चबूतरा
सफ - पंक्ति / कतार
सूफी/सफा - पवित्र

मक्का-मदीना में मस्जिद के बाहर एक सुफा (चबूतरा) बना हुआ है। उस सूफे पर बैठकर रचा गया काव्य ही सूफी काव्य कहलाता है।

3. 'सफ' शब्द से → 'सफ' का शाब्दिक अर्थ होता है पंक्ति या कतार अर्थात रोजे कयामत (प्रलय) के वक्त जिन लोगों को श्रेष्ठ आचरण के कारण एक अलग पंक्ति में खड़ा कर दिया जाएगा उनके द्वारा रचित काव्य ही सूफी काव्य कहलाता है।

4. सूफी या सफा शब्द से → सूफी या सफा का शाब्दिक अर्थ होता है 'पवित्र' अर्थात परमात्मा के प्रति स्वच्छ निश्छल भाव रखकर पवित्र आचरण करने वाले लोगों के द्वारा रचा गया काव्य ही सूफी काव्य कहलाता है।

5. सूफिया या सोफियस शब्द से → सूफिया या सोफियस शब्द का शाब्दिक अर्थ होता है 'परमज्ञानी व्यक्ति' अर्थात ऐसे भक्तकवि जिनको पूर्णत्व का साक्षात्कार हो चुका है उनके द्वारा रचित काव्य ही सूफी काव्य कहलाता है।

6. तसव्वुफ शब्द से → तसव्वुफ का शाब्दिक अर्थ होता है 'परमसत्य का ज्ञाता' अर्थात जिसको वास्तविक या ब्रह्म या सत्य का ज्ञान हो चुका है उनके द्वारा रचित काव्य ही सूफी काव्य कहलाता है।

II सगुण भक्ति काव्यधारा ⇒

जिन भक्त कवियों के द्वारा ईश्वर का कोई रूप निर्धारित करके साकार ईश्वर की उपासना की गई है उनके द्वारा रचित काव्य ही सगुण भक्ति काव्य कहलाता है।

सगुण भक्ति काव्य धारा के भी पुनः दो उपभेद कर दिये जाते हैं यथा —

I. कृष्ण भक्ति धारा या रागानुगा भक्ति काव्य धारा (कृष्णाश्रयी)
II. राम भक्ति काव्यधारा या वैधी भक्ति काव्यधारा (रामाश्रयी)

(1) कृष्ण भक्ति या रागानुगा भक्ति काव्य धारा ↳

→ जिन सगुण भक्त कवियों के द्वारा भगवान विष्णु के अवतार के रूप में कृष्ण को अपना आराध्य मानकर काव्य रचना की गई उनके द्वारा रचित साहित्य को भी कृष्ण भक्ति / कृष्णाश्रयी / रागानुगा भक्ति काव्य के नाम से जाना जाता है।

→ सम्पूर्ण साहित्य जगत में 'कृष्ण' शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख हमारे आदिग्रंथ 'ऋग्वेद' में प्राप्त होता है।

→ ऋग्वेद का विभाजन 10 मण्डलो एवं 1028 सूक्तो में किया गया है जिनमें से अनेक सूक्तो के रचियता कृष्ण ऋषि माने गए हैं।

इस प्रकार ऋग्वेद में उल्लेखित कृष्ण भगवद् स्वरूप कृष्ण नहीं मानकर एक ऋषि विशेष मात्र माना जाता है।

→ भगवद्स्वरूप कृष्ण का सर्वप्रथम उल्लेख कौषीतकी ब्राह्मण ग्रंथ एवं तदुपरांत 'छान्दोग्योपनिषद' ग्रंथ में प्राप्त होता है।

→ भगवद्स्वरूप कृष्ण के भी प्रमुखतः दो रूप माने गए हैं यथा —

(i) लोकरक्षक कृष्ण एवं ऐश्वर्यमय कृष्ण → महाभारत या गीता में उल्लेखित कृष्ण।

(ii) लोकरंजक कृष्ण या माधुर्यमय कृष्ण → पुराणों में उल्लेखित कृष्ण।

→ वेदव्यासजी द्वारा रचित 18 पुराणों में भी श्रीमद्भागवत पुराण में कृष्ण का सर्वाधिक वर्णन किया गया है।

→ हिन्दी साहित्य के कृष्ण भक्त कवियों के द्वारा रचित अधिकतर रचनाएं श्रीमद्भागवतपुराण पर ही आधारित मानी जाती है अर्थात श्रीमद्भागवत्पुराण को हिन्दी कृष्णभक्ति काव्य का मुख्य उपजीव्य ग्रंथ माना जाता है।

→ हिन्दी साहित्य में कृष्ण को काव्य का विषय बनाने वाले सर्वप्रथम कवि 'विद्यापति' माने जाते हैं इनकी पदावली रचना में कृष्ण की रासलिलाओं का ही वर्णन किया गया है।

→ हिन्दी साहित्य में 'सूरदास' कृष्ण भक्ति साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कवि हुए हैं जिसके कारण इनको कृष्णभक्ति काव्यधारा का प्रतिनिधि कवि माना जाता है

(ii) राम भक्ति या वैधी भक्ति काव्यधारा

→ जिन सगुण भक्त कवियों के द्वारा भगवान विष्णु के अवतार के रूप में राम को अपना आराध्य मानकर काव्य रचना की गई उसे ही राम भक्ति / वैधी भक्ति / रामाश्रयी भक्ति धारा के नाम से जाना जाता है।

→ स्वामी रामानंद इस काव्य धारा के प्रवर्तक तथा गोस्वामी तुलसीदास इस काव्य धारा के प्रतिनिधि कवि माने जाते हैं।

→

रामाश्रयी काव्यधारा की प्रमुख विशेषताएँ →

→ इस काव्यधारा में राम को लोकनायक के रूप में स्थापित किया गया है।

→ इस काव्य धारा में आदर्शवाद, मर्यादावाद, मानवतावाद, समन्वयवाद इत्यादि पर बल दिया गया है।

→ इस काव्यधारा में अवधि भाषा का अधिक प्रयोग किया गया है परन्तु उसके साथ-साथ ब्रज भाषा का प्रयोग भी किया गया है।

→ इस काव्य धारा में प्रबन्धात्मक एवं मुक्तक दोनों प्रकार की काव्य शैली लिखे गए हैं।

→ इस साहित्य की रचनाओं में 'शांत रस' की प्रधानता है साथ लगभग सभी रसों का प्रयोग किया गया है।

→ इस काव्यधारा के अधिकतर कवियों ने 'दास्य भक्ति' भावना पद्धति से लेखन कार्य किया है।